[नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत CBSE द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यक्रम एवं NCERT द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यपुस्तकों पर आधारित]

संजीव रिफ्रेशर

हिन्दी

(कक्षा 6 के विद्यार्थियों के लिए)

मुख्य विशेषताएँ

1. सभी कविताओं का कविता सार
2. सम्पूर्ण कविताओं का कठिन शब्दार्थ सहित भावार्थ
3. काव्यांशों पर आधारित बहुवैकल्पिक प्रश्न एवं अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न
4. सभी गद्य पाठों का सार
5. सभी गद्य पाठों के कठिन शब्दों के अर्थ
6. महत्त्वपूर्ण गद्यांशों पर आधारित बहुवैकल्पिक प्रश्न एवं अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न
7. पाठ्यपुस्तक के सभी प्रश्न
8. पाठ्यक्रमानुसार अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न
9. व्याकरण
10. पत्र-लेखन
11. निबन्ध-लेखन
12. अनुच्छेद-लेखन
13. अपठित बोध
14. सूचना-लेखन
15. संवाद-लेखन

प्रकाशक :
संजीव प्रकाशन
जयपुर

मूल्य :
₹ 160.00

प्रकाशक :
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

लेजर टाइपसैटिंग :
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

❊ ❊ ❊ ❊

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं-
  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय-सूची

वसंत-1

1.	वह चिड़िया जो	(केदारनाथ अग्रवाल)	1–7
2.	बचपन	(कृष्णा सोबती)	8–17
3.	नादान दोस्त	(प्रेमचंद)	18–28
4.	चाँद से थोड़ी-सी गप्पें	(शमशेर बहादुर सिंह)	29–37
5.	साथी हाथ बढ़ाना	(साहिर लुधियानवी)	38–46
6.	ऐसे-ऐसे	(विष्णु प्रभाकर)	47–55
7.	टिकट-अलबम	(सुंदरा रामस्वामी)	56–66
8.	झाँसी की रानी	(सुभद्रा कुमारी चौहान)	67–90
9.	जो देखकर भी नहीं देखते	(हेलेन केलर)	91–98
10.	संसार पुस्तक है	(जवाहरलाल नेहरू)	99–106
11.	मैं सबसे छोटी होऊँ	(सुमित्रानंदन पंत)	107–114
12.	लोकगीत	(भगवतशरण उपाध्याय)	115–124
13.	नौकर	(अनु बंद्योपाध्याय)	125–137
14.	वन के मार्ग में	(तुलसीदास)	138–142

बाल रामकथा
(पूरक पाठ्यपुस्तक)

1.	अवधपुरी में राम	143–145
2.	जंगल और जनकपुर	145–147
3.	दो वरदान	147–149
4.	राम का वन-गमन	149–151
5.	चित्रकूट में भरत	151–153
6.	दंडक वन में दस वर्ष	153–155
7.	सोने का हिरण	155–157

8.	सीता की खोज	157–159
9.	राम और सुग्रीव	159–161
10.	लंका में हनुमान	161–163
11.	लंका विजय	163–166
12.	राम का राज्याभिषेक	166–168
	प्रश्न–अभ्यास	168–171

व्याकरण

1.	संज्ञा	172–174
2.	संज्ञा के विकारक तत्त्व : लिंग	174–177
3.	संज्ञा के विकारक तत्त्व : वचन	177–180
4.	संज्ञा के विकारक तत्त्व : कारक	180–182
5.	सर्वनाम	182–183
6.	विशेषण	183–186
7.	क्रिया	186–189
8.	काल	189–190
9.	क्रियाविशेषण	191–192
10.	सम्बन्धबोधक अव्यय	192–193
11.	समुच्चयबोधक अव्यय	193–194
12.	विस्मयादिबोधक अव्यय	194–195
13.	समास	195–197
14.	सन्धि	197–199
15.	उपसर्ग	199–200
16.	प्रत्यय	200–202
17.	तत्सम–तद्भव	202–203
18.	विलोम शब्द	203–204
19.	पर्यायवाची	205–206
20.	युग्म–शब्द	206–209

21.	एकार्थी शब्द व अनेकार्थी शब्द	209–211
22.	शुद्ध शब्द एवं अशुद्ध वाक्य	211–216
23.	वाक्य परिचय	216–218
24.	विराम चिह्न	218–220
25.	मुहावरे	220–225
26.	कहावतें या लोकोक्तियाँ	225–227

रचना–भाग

1.	पत्र–लेखन	228–236
2.	निबन्ध–लेखन	237–250
3.	अनुच्छेद–लेखन	251–254
4.	अपठित बोध	255–265
5.	सूचना–लेखन	266–267
6.	संवाद–लेखन	268–269

हिन्दी कक्षा-6

वसंत-1

वह चिड़िया जो

पाठ 1

केदारनाथ अग्रवाल

कविता का सार

'वह चिड़िया जो' शीर्षक कविता कवि केदारनाथ अग्रवाल द्वारा रचित है। कवि बताता है कि नीले पंखों वाली छोटी चिड़िया सन्तोषी स्वभाव की है। वह अन्न से बहुत प्यार करती है। वह कंठ खोलकर अपनेपन से वन में रसीले स्वर में गाती है। उस छोटी मुँहबोली चिड़िया को एकान्त बहुत प्रिय है। वह उफनती नदी से मोती जैसी जल की बूँदें चोंच में भर लाती है। उसे स्वयं पर गर्व है और वह नदी से बहुत प्यार करती है।

काव्यांशों की व्याख्या–

(1)

वह चिड़िया जो–
चोंच मारकर
दूध-भरे जुंडी के दाने
रुचि से, रस से खा लेती है
वह छोटी संतोषी चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे अन्न से बहुत प्यार है।

कठिन शब्दार्थ–दूध भरे = कच्चे, अधपके दाने। **जुंडी** = जौ-बाजरे की कच्ची बालियाँ। **रस** = आनन्द, स्वाद।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक वसन्त भाग-1 की 'वह चिड़िया जो' शीर्षक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता श्री केदारनाथ अग्रवाल हैं। इसमें नीले पंखों वाली चिड़िया के स्वभाव आदि के बारे में बताया गया है।

व्याख्या–कवि कहता है कि वह चिड़िया जिसके पंख नीले हैं, वह अपनी चोंच से जुंडी (अधपके जौ-बाजरे की बालियों) के दूध से भरे दानों को रुचि से खाती है। वह उन दूध भरे कच्चे दानों को रस लेकर (स्वादपूर्वक) खाती है। वह चिड़िया छोटी और संतोष करने वाली है। वह कहती है कि मुझे अनाज के दाने बहुत प्रिय हैं।

काव्यांश से सम्बन्धित प्रश्न

(i) बहुवैकल्पिक प्रश्न–

1. पद्यांश में वर्णित चिड़िया खाती है—
   (क) गेहूँ की बालियों के दूध भरे कच्चे दाने (ख) जुंडी की बालियों के दूध भरे कच्चे दाने
   (ग) अन्न की बालियों के दूध भरे कच्चे दाने (घ) अनार के दूध भरे कच्चे दाने। ( )
2. पद्यांश में वर्णित चिड़िया कैसी बतायी गई है?
   (क) काली चिड़िया (ख) भूरी चिड़िया (ग) नीली चिड़िया (घ) छोटी, संतोषी चिड़िया ( )

3. चिड़िया का स्वभाव कैसा बताया गया है?
(क) लालची (ख) बड़बोली (ग) संतोषी (घ) आलसी ( )

उत्तर–1. (ख) 2. (घ) 3. (ग)

(ii) अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. चिड़िया जुंडी के दाने कैसे खाती है?
उत्तर–चिड़िया जुंडी के दाने चोंच मारकर रुचि से खाती है।
प्रश्न 2. चिड़िया को क्या पसन्द है?
उत्तर–चिड़िया को जौ व बाजरे के दूध से भरे कच्चे दाने खाना पसंद है।
प्रश्न 3. चिड़िया के पंखों का रंग कैसा है?
उत्तर–चिड़िया के पंखों का रंग नीला है।
प्रश्न 4. पद्यांश में चिड़िया की क्या विशेषता बतायी गई है?
उत्तर–पद्यांश में चिड़िया की विशेषता आकार में छोटी तथा स्वभाव में संतोषी बतायी गई है।

(2)

वह चिड़िया जो–
कंठ खोलकर
बूढ़े वन-बाबा की खातिर
रस उँडेलकर गा लेती है
वह छोटी मुँह बोली चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे विजन से बहुत प्यार है।

कठिन शब्दार्थ–**कंठ** = गला। **बूढ़े** = पुराने। **वन-बाबा** = जंगल रूपी बाबा। **की खातिर** = के लिए। **रस उँडेलकर** = बहुत मीठी आवाज में। **विजन** = एकांत, जहाँ कोई न रहता हो।

प्रसंग–प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक वसन्त भाग-1 के 'वह चिड़िया जो' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता श्री केदारनाथ अग्रवाल हैं। इसमें चिड़िया द्वारा कंठ खोलकर मधुर स्वर में गाने तथा आकाश में मुक्त रूप से उड़ने का वर्णन किया गया है।

व्याख्या–कवि कहता है कि वह चिड़िया गला खोलकर बहुत ही मधुर स्वर में बूढ़े वन-बाबा को खुश करने के लिए गाती है। वह छोटी-सी चिड़िया जंगल-बाबा की मुँह बोली बेटी के समान है। उसके नीले पंख अत्यधिक सुन्दर हैं। वह कहती है कि मुझे एकांत (जंगल) से बहुत प्यार है, अर्थात् उसे स्वतंत्र रहना बहुत अच्छा लगता है।

काव्यांश से सम्बन्धित प्रश्न

(i) बहुवैकल्पिक प्रश्न–

1. कंठ खोलकर कौन गाती है?
(क) वन-बाबा (ख) चिड़िया (ग) मोरनी (घ) कोयल ( )
2. चिड़िया किसके खातिर गाती है?
(क) अपने साथियों की खातिर (ख) दुनिया की खातिर
(ग) वन-बाबा की खातिर (घ) खुद की खातिर ( )
3. रस उँडेलकर गाने का क्या अर्थ है?
(क) मीठे स्वर में गाना (ख) ऊँचे स्वर में गाना
(ग) मद्धिम स्वर में गाना (घ) कठोर स्वर में गाना ( )

उत्तर–1. (ख) 2. (ग) 3. (क)

(ii) अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. चिड़िया का गान कैसा है?

उत्तर–चिड़िया का गान सुरीला, रसीला व आनन्ददायक है।

प्रश्न 2. चिड़िया कैसी है?

उत्तर–चिड़िया छोटी, मुँहबोली और नीले पंखों वाली है।

प्रश्न 3. चिड़िया को जंगल से प्यार क्यों है?

उत्तर–चिड़िया एकांत में रहना चाहती है, इसलिए उसे जंगल से प्यार है।

प्रश्न 4. चिड़िया को किसकी मुँहबोली बेटी बताया गया है?

उत्तर–चिड़िया को वन-बाबा की मुँहबोली बेटी बताया गया है।

(3)

वह चिड़िया जो–
चोंच मारकर
चढ़ी नदी का दिल टटोलकर
जल का मोती ले जाती है
वह छोटी गरबीली चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे नदी से बहुत प्यार है।

कठिन शब्दार्थ–**चढ़ी नदी** = वह नदी जिसमें किनारों तक लबालब पानी भरा हो। **दिल टटोलकर** = दिल की बात जानकर, क्षमता का अनुमान लगाकर। **गरबीली** = गर्व से युक्त, गर्व करने वाली।

प्रसंग–प्रस्तुत पद्यांश 'वह चिड़िया जो' नामक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता श्री केदारनाथ अग्रवाल हैं। इसमें कवि ने छोटी चिड़िया के गर्वयुक्त स्वभाव तथा स्वतंत्र विचरण का वर्णन किया है।

व्याख्या–कवि कहता है कि वह छोटी चिड़िया जिस नदी के किनारों तक पानी लबालब भरा रहता है, उसे चोंच मारकर उसका हृदय टटोलती है, अर्थात् उसकी इच्छा जानकर ही अपनी चोंच से जल रूपी मोती ग्रहण करती है। वह नीले पंखों वाली चिड़िया बहुत गर्व करने वाली है। उसे नदी से बहुत प्रेम है, अर्थात् वह बहती नदी का पानी स्वतन्त्रतापूर्वक पीना चाहती है।

काव्यांश से सम्बन्धित प्रश्न

(i) बहुवैकल्पिक प्रश्न–

1. चढ़ी नदी का दिल कौन टटोलता है?
   (क) चिड़िया (ख) गर्वीली चिड़िया
   (ग) पक्षी (घ) मछुआरे ( )
2. 'गरबीली' शब्द का अर्थ क्या है?
   (क) गर्व से युक्त (ख) घमंड करने वाली
   (ग) गीत गाने वाली (घ) भय से युक्त ( )
3. पद्यांश में वह चिड़िया कैसी बतायी गई है?
   (क) नीले पंखों वाली व कमजोर (ख) नीले पंखों वाली व गर्वीली
   (ग) छोटी व संतोषी (घ) मुँहबोली व चंचल। ( )

उत्तर–1. (ख) 2. (क) 3. (ख)

(ii) अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. गर्वीली चिड़िया नदी से जल कैसे लेती है?

उत्तर–गर्वीली चिड़िया नदी की इच्छा जानकर, चोंच से जल लेती है।

प्रश्न 2. चिड़िया को किससे बहुत प्यार है?

उत्तर–चिड़िया को नदी से बहुत प्यार है।

प्रश्न 3. नदी का जल कैसा है?

उत्तर—नदी का जल मोती के समान है।

प्रश्न 4. कवि ने चिड़िया को गर्वीली क्यों कहा है?

उत्तर—कवि ने चिड़िया को गर्वीली इसलिए कहा है, क्योंकि वह स्वयं जल की खोज करती है और नदी की इच्छा जानकर ही उससे जल-कण ग्रहण करती है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

कविता से—

प्रश्न 1. कविता पढ़कर तुम्हारे मन में चिड़िया का जो चित्र उभरता है, उस चित्र को कागज पर बनाओ।

उत्तर—कविता पढ़कर हमारे मन में यह चित्र उभरता है—

(1) चिड़िया का आकार छोटा है।
(2) वह नीले पंखों वाली सुंदर चिड़िया है।
(3) चिड़िया मधुर स्वर में गाती है।
(4) वह उफनती नदी का पानी पीती है।
(5) वह साहस एवं स्वतन्त्रता से जीती है।
(6) उसे दूध-भरे जुंडी के दाने बहुत प्रिय हैं।

चित्र

प्रश्न 2. तुम्हें कविता का कोई और शीर्षक देना हो तो क्या शीर्षक देना चाहोगे? उपयुक्त शीर्षक सोचकर लिखो।

उत्तर—कविता का अन्य उपयुक्त शीर्षक—'नन्हीं चिड़िया', 'सुन्दर गर्वीली चिड़िया' या 'चिड़िया रानी बड़ी सयानी' हो सकता है।

प्रश्न 3. इस कविता के आधार पर बताओ कि चिड़िया को किन-किन चीजों से प्यार है?

उत्तर—चिड़िया को दूध भरे जौ-बाजरे आदि अधपके अनाज के दाने प्रिय हैं, वह सुनसान जंगल से तथा उफनती नदी से प्यार करती है। वन-बाबा से भी उसे प्यार है।

प्रश्न 4. आशय स्पष्ट करो—

(क) रस उँडेलकर गा लेती है

(ख) चढ़ी नदी का दिल टटोलकर
जल का मोती ले जाती है

उत्तर—(क) चिड़िया जंगल में स्वतंत्र रूप से रहती है, उसे किसी तरह का बन्धन स्वीकार नहीं है। वह स्वतंत्र होने से मधुर स्वर में गाती है और जंगल के वातावरण को आनन्द से भर देती है।

(ख) इस पंक्ति का आशय है कि चिड़िया ऐसे ही नदी के जल-कण से अपनी प्यास नहीं बुझाती। वह पानी के वेग से लबालब भरी नदी के जलराशि का अनुमान लगाती है अर्थात् उसके दिल को पहले टटोलती है फिर उसके मोती के समान जल-कण से अपनी प्यास बुझाती है।

अनुमान और कल्पना—

प्रश्न 1. कवि ने नीली चिड़िया का नाम नहीं बताया है। वह कौन-सी चिड़िया रही होगी ? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए पक्षी-विज्ञानी सालिम अली की पुस्तक 'भारतीय पक्षी' देखो। इनमें ऐसे पक्षी भी शामिल हैं जो जाड़े में एशिया के उत्तरी भाग और अन्य ठंडे देशों से भारत आते हैं। उनकी पुस्तक को देखकर तुम अनुमान लगा सकते हो कि इस कविता में वर्णित नीली चिड़िया शायद इनमें से कोई एक रही होगी—

नीलकण्ठ
छोटा किलकिला